SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

सोशल मीडिया का उच्चतर माध्यमिक शाला के विद्यार्थियों पर प्रभाव का एक अध्ययन

प्रांजल शर्मा, एम.एड. शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
मनीषा जैन, (Ph.D.), शिक्षा संकाय,
प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors

प्रांजल शर्मा, एम.एड. शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
मनीषा जैन, (Ph.D.), शिक्षा संकाय,
प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 28/07/2022
Revised on : -----
Accepted on : 04/08/2022
Plagiarism : 09% on 29/07/2022

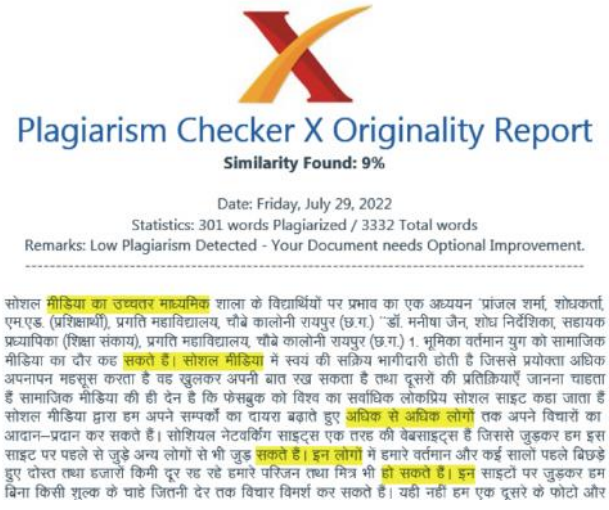
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 9%

Date: Friday, July 29, 2022
Statistics: 301 words Plagiarized / 3332 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

सोशल मीडिया का उच्चतर माध्यमिक शाला के विद्यार्थियों पर प्रभाव का एक अध्ययन 'प्रांजल शर्मा, शोधकर्ता, एम.एड. (प्रशिक्षार्थी), प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी रायपुर (छ.ग.) "डॉ. मनीषा जैन, शोध निर्देशिका, सहायक प्रध्यापिका (शिक्षा संकाय), प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी रायपुर (छ.ग.) 1. भूमिका वर्तमान युग को सामाजिक मीडिया का दौर कह सकते हैं। सोशल मीडिया में स्वयं की सक्रिय भागीदारी होती है जिससे प्रयोक्ता अधिक अपनापन महसूस करता है वह खुलकर अपनी बात रख सकता है तथा दूसरों की प्रतिक्रियाएँ जानना चाहता हैं सामाजिक मीडिया की ही देन है कि फेसबुक को विश्व का सर्वाधिक लोकप्रिय सोशल साइट कहा जाता हैं सोशल मीडिया द्वारा हम अपने सम्पर्कों का दायरा बढ़ाते हुए अधिक से अधिक लोगों तक अपने विचारों का आदान–प्रदान कर सकते हैं। सोशियल नेटवर्किंग साइट्स एक तरह की वेबसाइट्स हैं जिससे जुड़कर हम इस साइट पर पहले से जुड़े अन्य लोगों से भी जुड सकते हैं। इन लोगों में हमारे वर्तमान और कई सालों पहले बिछड़े हुए दोस्त तथा हजारों किमी दूर रह रहे हमारे परिजन तथा मित्र भी हो सकते हैं। इन साइटों पर जुड़कर हम बिना किसी शुल्क के चाहे जितनी देर तक विचार विमर्श कर सकते हैं। यही नहीं हम एक दूसरे के फोटो और

शोध सार

सोशल मीडिया एक तरह से दुनिया के विभिन्न कोनों में बैठे उन लोगों से संवाद है जिनके पास इंटरनेट की सुविधा हैं। इसके जरिए ऐसा औजार पूरी दुनिया के लोगों के हाथ लगा है, जिसके जरिए वे न सिर्फ अपनी बातों को दुनिया के सामने रखते हैं, बल्कि वे दूसरी बातों सहित दुनिया की तमाम घटनाओं से अवगत भी होते हैं। यहाँ तक कि सेल्फी सहित तमाम घटनाओं की तस्वीरें भी लोगों के साथ शेयर करते हैं। इतना ही नहीं, इसके जरिए यूजर हजारों लोगों तक अपनी बात महज एक क्लिक की सहायता से पहुँचा सकता हैं। अब तो सोशल मीडिया सामान्य संपर्क, संवाद या मनोरंजन से इतर नौकरी आदि ढूंढ़ने, उत्पादों या लेखन के प्रचार–प्रसार में भी सहायता करता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सोशल मीडिया का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना था। परिणाम प्रदर्शित करते हैं कि सोशल मीडिया के प्रयोग से विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि हुई है।

मुख्य शब्द

सोशल मीडिया, उच्चतर माध्यमिक शाला, विद्यार्थी.

भूमिका

वर्तमान युग को सामाजिक मीडिया का दौर कह सकते हैं। सोशल मीडिया में स्वयं की सक्रिय भागीदारी होती है जिससे प्रयोक्ता अधिक अपनापन महसूस करता है। वह खुलकर अपनी बात रख सकता है तथा दूसरों की प्रतिक्रियाएँ जानना चाहता हैं। सामाजिक मीडिया की ही देन है कि फेसबुक को विश्व का सर्वाधिक लोकप्रिय सोशल साइट कहा जाता हैं। सोशल मीडिया द्वारा हम अपने सम्पर्कों का दायरा बढ़ाते हुए अधिक से अधिक

लोगों तक अपने विचारों का आदान–प्रदान कर सकते हैं। सोशियल नेटवर्किंग साइट्स एक तरह की वेबसाइट्स हैं जिससे जुड़कर हम इस साइट पर पहले से जुड़े अन्य लोगों से भी जुड़ सकते हैं। इन लोगों में हमारे वर्तमान और कई सालों पहले बिछड़े हुए दोस्त तथा हजारों किमी दूर रह रहे हमारे परिजन तथा मित्र भी हो सकते हैं। इन साइटों पर जुड़कर हम बिना किसी शुल्क के चाहे जितनी देर तक विचार विमर्श कर सकते हैं। यही नहीं हम एक दूसरे के फोटो और विडियों भी देख सकते हैं। विडियो कॉल के जरिये हम दूर रहकर भी आमने सामने बात कर सकते हैं। अन्य किसी माध्यम की अपेक्षा ये सस्ते तथा सुलभ होते हैं इसलिए सोशल साइट्स काफी लोकप्रिय होती जा रही है।

सामाजिक मीडिया एक अपरम्परागत मीडिया हैं, यह एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है जिसे इंटरनेट के माध्यम से पहुंच बना सकते हैं। सोशल मीडिया एक विशाल नेटवर्क है, जो कि सारे संसार को जोड़े रखता हैं। यह संचार का एक बहुत अच्छा माध्यम हैं। यह द्रुत गति से सूचनाओं के आदान–प्रदान करने, जिसमें हर क्षेत्र की खबरें होती हैं, को समाहित किए होता है।

सोशल मीडिया एक तरह से दुनिया के विभिन्न कोनों में बैठे उन लोगों से संवाद है जिनके पास इंटरनेट की सुविधा हैं। इसके जरिए ऐसा औजार पूरी दुनिया के लोगों के हाथ लगा है, जिसके जरिए वे न सिर्फ अपनी बातों को दुनिया के सामने रखते हैं, बल्कि वे दूसरी बातों सहित दुनिया की तमाम घटनाओं से अवगत भी होते हैं। यहाँ तक कि सेल्फी सहित तमाम घटनाओं की तस्वीरें भी लोगों के साथ शेयर करते हैं। इतना ही नहीं, इसके जरिए यूजर हजारों लोगों तक अपनी बात महज एक क्लिक की सहायता से पहुँचा सकता हैं अब तो सोशल मीडिया सामान्य संपर्क, संवाद या मनोरंजन से इतर नौकरी आदि ढूंढ़ने, उत्पादों या लेखन के प्रचार–प्रसार में भी सहायता करता है।

सामाजिक मीडिया के दो भेद किये गये थे एक तो श्रव्य दूसरा दृश्य। श्रव्य साधन धीरे–धीरे कम प्रभावी होता गया लेकिन दृश्य साधन के साथ–साथ श्रव्य व दृश्य साधन अन्ततः लोकप्रिय साधनों की परिगणना में आने लगे। आधुनिक युग में दूरदर्शन उसी श्रव्य–दृश्य साधन का आधुनिकतम रूप हैं। इसकी प्रभावशीलता का उपयोग विज्ञान व वाणिज्य दोनों ही क्षेत्रों में समान रूपेण करना चाहते हैं। सच तो यह है कि इस प्रभावशीलता के महत्व ने विज्ञापन एवं वाणिज्य को एक दूसरे के पूरक बना दिया है।

प्रायः यह देखा जाता है कि जो बालक या किशोर प्रमुख चल–चित्रों एवं धारावाहिकों की महत्ता को हृदयगम नहीं कर पाते वे भी सामाजिक मीडिया पर प्रस्तुत विज्ञापनों (व्यावसायिक) में अपार आनन्द प्राप्त करते हैं। इसी सन्दर्भ के कारण इन विज्ञापनों के किशोर चित पर अमिट प्रभाव व आकर्षण के कारण शिक्षा मूलक शैक्षिक चेतना की गवेशणा की आवश्यकता अनुभव हुई। इस अध्ययन के परिणाम स्वरूप यह वैज्ञानिक निष्कर्ष प्रस्तुत किये जा सकते हैं कि सामाजिक मीडिया से बालकों पर कितना शिव, अशिव प्रभाव पड़ता हैं। शिक्षा के क्षेत्र में यह अपने ढंग का अपूर्व व फलदायक प्रयास है।

अध्ययन का महत्व

सोशल मीडिया पर शैक्षिक दृष्टि से अध्ययन किया जाए तो आज के विद्यार्थी जो उच्चतर माध्यमिक शाला में अध्ययनरत है। सोशल मीडिया का उचित उपयोग ज्ञान को बढ़ाने में काफी हद तक कारगार सिद्ध हुआ हैं। पिछले कुल सालों से सोशल नेटवर्किंग सिर्फ किशोरों के बीच ही नहीं बल्कि पुरानी पीढ़ी सहित सभी लोगों के बीच काफी लोकप्रिय हो गया हैं। व्यक्तिगत रूप से यह आपके मित्रों और परिवार के मध्य संपर्क स्थापित करने का अवसर प्रदान करता हैं, जबकि व्यवसायिक रूप में सोशल नेटवर्किंग साइट्स अपने पहचान के चित्र, प्रतिष्ठा नेतृत्व पीढ़ी को स्थापित करके कारोबार को बनाये रखने और बढ़ाने में मदद करती हैं। फेसबुक जैसी सोशल मीडिया साईटें आधुनिक जीवन का एक अहम हिस्सा बन गई हैं। इसकी सहायता से आप अपने मित्रों के साथ तुरन्त और वास्तविक समय से जुड़ सकते हैं। उपयोगकर्ता एक दूसरे से बातचीत कर सकते हैं। बार–बार जुड़ सकते हैं, और सामुहीकरण कर करते हैं। इंटरनेट का उचित उपयोग करते शिक्षा संबंधी अनेकों जानकारियों को प्राप्त कर सकते हैं।

परन्तु इसके साथ ही आज के विद्यार्थी इसमें नकारात्मक प्रभाव से अछुते नहीं हैं। अधिकतर विद्यार्थी सोशल मीडिया पर समय गुजारते हैं। लेकिन सोशल मिडिया का अत्यधिक और अनियंत्रित उपयोग गंभीर लत का कारण बन सकता हैं। सोशल मीडिया गतिविधियों के साथ आनंद लेने की भावना हमारे मस्तिष्क के केन्द्र की उत्तेजना के कारण जाग्रत होती हैं। इंटरनेट, फेसबुक, व्हाट्सअप का अत्यधिक उपयोग एकाग्रता को भंग करने में प्रमुख भूमिका निभा सकता हैं। सोशल मीडिया पर काम करते समय आप काम को एक दूसरे में बदलते रहे, एक ही काम पर ध्यान केन्द्रित करने से आपकी एकाग्रता की क्षमता कम हो जाती हैं। ऐसी गतिविधियां आपके मस्तिष्क को शिथिल कर देती हैं, इसका प्रचुर मात्रा में उपयोग मस्तिष्क को थकान और तनाव की ओर ले जाता हैं। जब भी आप अपना कोई काम इंटरनेट पर शुरू करते हैं तो सबसे पहले अपनी खुद भी विशेष रूप से फेसबुक प्रोफाइल की जांच करते हैं, जो वास्तव में बहुत उपयोगी समय को बर्बाद करती है।

यदि आपने अपना पता, फोन नंबर कार्यक्षेत्र और अपने परिवार की जानकारी किसी भी सोशल मीडिया की साईट पर अपडेट किया है तो आपने अपनी गोपनीयता खो दिया हैं। विद्यार्थी सोशल मीडिया के दुरूपयोग से बचें। यह एक सूचना का भंडार हैं इसलिए इसका उपयोग बुद्धिमानी से करें।

पूर्व में किए गए शोध कार्य

यद्यपि समाचार पत्र–पत्रिकाओं में सोशल मीडिया से संबंधित बहुत लेख प्रकाशित होते रहते हैं परन्तु इस शीर्षक से संबंधित साहित्य का अभाव पाया गया। अतः सोशल मीडिया से संबंधित सभी प्रकाशित व अप्रकाशित साहित्य और कुछ विद्वानों एवं शोध छात्रों ने सोशल मीडिया से संबंधित विषय पर कार्य किया है उनको इसके अंतर्गत शामिल किया गया है।

शोध की प्रकृति के आधार पर शोधकर्ता को इस तथ्य का निर्धारण कर लेना चाहिये कि वह किन पद्धतियों की सहायता से अपने शोध कार्य का सम्पादन करेगा। सामाजिक शोध के लिये यह आवश्यक है कि शोध के पूर्व अध्ययनों और पूर्व परीक्षण का ज्ञान होना चाहिये। इससे उसे अध्ययन में आने वाली कठिनाइयों और संभावित विकल्पों की जानकारी प्राप्त होगी।

भारत में किए गए शोध अध्ययन

मुकुल श्रीवास्तव और सुरेन्द्र कुमार (2017) में प्रकाशित लेख–''सोशल मीडिया और युवा विकास'' इन्होंने अपने लेख में बताया है कि सोशल मीडिया के द्वारा प्राप्त होने वाली शिक्षा स्वास्थ्य और रोजगार आदि से संबंधित खबरों के माध्यम से युवाओं की जानकारी में वृद्धि और विकास हुआ हैं। आज सभी सम्प्रदायों, जाति, धर्म और देशों के युवा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर दिखाई देते हैं। इस प्रकार सोशल मीडिया के द्वारा युवा ज्यादा जागरूक हो रहे हैं। सोशल मीडिया ने युवाओं के विकास हेतु एक नया और बेहतर मंच प्रदान किया है।

A. Jesu Kulandairaj, (2017) 'Impact of social media on the lifestyle of youth'. इस लेख में बताया है कि वास्तव में सोशल नेटवर्किंग साइट्स जानकारी साझा करने, अपने विचारों को आकार देने, संस्कृतियों से लोगों को जोड़ने, सामाजिक कार्य में लोगों को भागीदार करने के रूप में एक शक्तिशाली अद्वितीय उपकरण के रूप में उभर रहा हैं। दुनियाँ भर के समुदाय अभी इस माध्यम के संचार को प्रभावित करने की क्षमता को समझने की सिर्फ शुरूआत कर रहे हैं। सोशल नेटवर्किंग साइट्स युवाओं को सामाजिक मुद्दों के खिलाफ उठाने और सामाजिक कल्याण के लिए जानकारी इन साइट्स पर साझा करने के लिए युवाओं को सक्षम बना रही हैं। युवा इन साइट्स की और अधिक क्षमताओं का पता लगाने के लिए लगे हुए हैं। हालांकि ये युवाओं पर कुछ नकारात्मक प्रभाव भी डाल रहा हैं। आज हम इन साइट्ों के बिना दुनियाँ के बारे में सोच भी नहीं सकतें, अतः कुछ सुधारात्मक और निवारक उपाय इन नकारात्मक प्रभावों को रोकने के लिए किये जाने चाहिए। सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने युवाओं की जीवन शैली को काफी प्रभावित किया हैं। युवाओं को अपना टैलेन्ट और रचनात्मकता दिखाने और रोजगार के विभिन्न अवसर उपलब्ध करा रहा है।

विदेशों में किए गए शोध अध्ययन

Gomathi Manickam Agust (2013) eas vius शोध कार्य 'The influence of Social Neutriling modern-Facebook on the Parent-Child Relationship in the Ramedial environment' उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि ज्यादातर बच्चे रोजाना लगभग 1–2 घंटे इंटरनेट का उपयोग करते हैं। लगभग 87.9 प्रतिशत बच्चे फेसबुक पर सक्रिय हैं, वे कम से कम दिन में एक बार तो फेसबुक अवश्य चौक करते हैं। बच्चे अपने विचारों को व्यक्त करने का एक बेहतर माध्यम मानते हैं। बहुत से बच्चे मानते हैं कि फेसबुक की वजह से उनका अपने माता–पिता के साथ व्यवहार तथा सम्बन्धों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। लगभग 60 प्रतिशत माता–पिता मानते हुए खुशी जाहिर करते हैं कि उनके बच्चों ने उनका फेसबुक एकांउट बनाया जिसके माध्यम से वे सदैव एक–दूसरे से व अपने मित्रों से जुड़े रहते हैं। इससे आपसी समझ व एक–दूसरे पर विश्वास आदि को भी बढ़ावा मिलता हैं, लेकिन आगे उन्होंने अपने अध्ययन में बताया कि कुछ माता–पिता यह मानते हैं कि फेसबुक ने उनके बच्चों की आदतें और व्यवहार को काफी प्रभावित किया हैं। बच्चों में फेसबुक की लत पड़ती जा रही है जो सही नहीं हैं इसका असर उनके आपसी सम्बन्धों पर भी पड़ रहा है।

ग्रेस सॉ (2011) ने बॉन्ड यूनिवर्सिटी ऑस्टेलिया के विद्यार्थी कौन सी सोशल साईट का सर्वाधिक उपयोग करते हैं और क्यूं? सोशल मीडिया के अंतर्गत सर्वाधिक उपयोग Facebook पर पाया गया एवं कुछ हद तक यह विद्यार्थियों पर निर्भर करता है कि विद्यार्थी शैक्षणिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं या वार्तालाप में समय व्यतीत करते हैं।

समस्या का कथन

सोशल मीडिया का माध्यमिक शाला के विद्यार्थियों पर प्रभाव का एक अध्ययन।

प्रकार्यात्मक परिभाषा

उच्चतर माध्यमिक स्तर

उच्चतर माध्यमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा क्रम की मजबूत कड़ी है। यह प्राथमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के मध्य सम्पर्क सूत्र का कार्य करती हैं। यह सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग हैं। उच्चतर माध्यमिक स्तर कक्षा 11वीं तथा 12वीं को कहा गया है।

सोशल मीडिया

वर्तमान समय में सामाजिक मीडिया का महत्व बढ़ता जा रहा हैं, यहाँ तक कि इलेक्ट्रोनिक और प्रिंट मीडिया भी इसके प्रभाव को मानने लगा हैं। कई बार तो सामाजिक मीडिया पर वायरल हुए पोस्ट्स और वीडियों के आधार पर मीडिया का मुख्य समाचार बनने लगता हैं इसलिए विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक संगठनों, सरकारी नेताओं आदि ने अपने व्यक्तिगत खातों, पेज या ग्रुप के आधार पर सामाजिक मीडिया में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रखी हैं। कई लोग तो इसे जनमत तैयार करने का एक उपक्रम मानने लगे हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

सोशल मीडिया का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित परिकल्पना को निर्माण किया गया है:

H_1 सोशल मीडिया का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया जाएगा।

अध्ययन की परिसीमा

- शोध उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित किया जायेगा।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिये रायपुर शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं ग्रामीण माध्यमिक स्तर के

विद्यालय 200 छात्र–छात्राओं को शामिल किया जायेगा।

- अध्ययन हेतु शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र से 5–5 विद्यालयों का चयन किया जाएगा।
- अध्ययन के लिये प्रत्येक शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों से 10 छात्र एवं 10 छात्राओं का चयन किया जाएगा।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में ''सोशल मीडिया का उच्चतर माध्यमिक शाला के विद्यार्थियों पर प्रभाव का अध्ययन'' ज्ञात करने के लिए इस शोध में स्व निर्मित प्रश्नावली का अध्ययन न्यादर्श यादृच्छिक आधार पर किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध प्रबंध में रायपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं का प्रतिदर्श के रूप में चयनित किया गया है।

तालिका क्रमांक 1: जनसंख्या मे सम्मिलित विद्यालय एवं विद्यार्थी

क्रमांक	विद्यालय का नाम	विद्यालय की संख्या	छात्र	छात्राएं	योग
1.	शहरी क्षेत्र के विद्यालय	5	350	269	619
2.	ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय	5	346	206	552
	योग		696	475	1171

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

न्यादर्श

अध्ययन हेतु चयनित न्यादर्श में छात्र एवं छात्राओं की संख्या एवं विद्यालय।

तालिका क्रमांक 2: शहरी क्षेत्र के विद्यालय

क्रमांक	विद्यालय का नाम	छात्र	छात्राएं	योग
1.	वर्धमान इंगलिश मिडियम स्कूल	10	10	20
2.	सर्वोदय विद्या मंदिर, उ. मा. शाला	10	10	20
3.	वीर छत्रपति शिवाजी इंगलिश मिडियम स्कूल	10	10	20
4.	मायाराम सुरजन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, चौबे कालोनी, रायपुर	10	10	20
5.	ओम विद्यालय, कोटा, रायपुर	10	10	20
	योग	50	50	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

तालिका क्रमांक 3: ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय

क्रमांक	विद्यालय का नाम	छात्र	छात्राएं	योग
1.	गुरूकुल विद्यालय, दामाखेड़ा, रायपुर	10	10	20
2.	इंडियन पब्लिक स्कूल, नया रायपुर	10	10	20
3.	सरस्वती पब्लिक स्कूल, बीरगांव रायपुर	10	10	20
4.	शा. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, माना बस्ती, रायपुर	10	10	20
5.	शा. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, गुमा, रायपुर	10	10	20
	योग	50	50	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

चर

स्वतंत्र चरः उच्चतर माध्यमिक शाला के विद्यार्थी

आश्रित चरः सोशल मीडिया

उपकरण

प्रस्तुत लघुशोध अध्ययन हेतु शहरी विद्यालयों एवं ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों के ''सोशल मीडिया उपयोग संबंधी'' अध्ययन के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

$$X^2 = \Sigma\left[\frac{(fo-fe)^2}{fe}\right]$$

fo = अवलोकित आवृत्ति

fe = अनुमानित आवृत्ति

Σ = योग

परिकल्पना का प्रमापीकरण एवं परिणाम

परिकल्पना क्रमांक 01

सोशल मीडिया का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक 4: सोशल मीडिया का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का सहमत, तटस्थ, असहमत, संख्या, काई वर्ग एवं सार्थकता दर्शाने वाली सारणी

प्रश्न क्रं.	सहमत	तटस्थ	असहमत	N	X^2	सार्थक/सार्थक नहीं
1.	114	32	54	200	054.04	.01 स्तर पर सार्थक
2.	156	12	32	200	182.55	.01 स्तर पर सार्थक
3.	151	18	31	200	161.28	.01 स्तर पर सार्थक
4.	088	61	51	200	010.99	.01 स्तर पर सार्थक
5.	101	33	66	200	034.69	.01 स्तर पर सार्थक
6.	178	07	15	200	279.36	.01 स्तर पर सार्थक
7.	088	89	23	200	042.91	.01 स्तर पर सार्थक

व्याख्या

सोशल मीडिया के माध्यम से विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होना संभव हैं इसके लिए कुल 7 प्रश्नों का निर्माण किया गया।

प्रथम प्रश्नः सोशल नेटवर्किंग साइट आपकी शिक्षण संबंधी बाधाओं को कम करते हैं।

इस प्रश्न हेतु 200 विद्यार्थियों का अभिमत लिया गया, जिसमें 114 विद्यार्थियों ने अपनी सहमति तथा 32 विद्यार्थियों ने तटस्थता व 54 विद्यार्थियों ने असहमति प्रकट की हैं। 2 df के लिए .05 स्तर पर काई वर्ग का टेबल मूल्य 5.99 तथा .01 स्तर पर काई वर्ग का टेबल मूल्य 9.21 होता हैं। यदि काई वर्ग का गणना मूल्य टेबल मूल्य से अधिक हो तो अन्तर सार्थक होता हैं। विद्यार्थियों के सहमति, असहमति तथा तटस्थता में अन्तर की सार्थकता के लिए काई वर्ग की गणना की गई जो 54.04 प्राप्त हुआ है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है।

द्वितीय प्रश्नः सोशल मीडिया के उपयोग से विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि होती है।

इस प्रश्न हेतु 200 विद्यार्थियों का अभिमत लिया गया जिसमें 156 विद्यार्थियों ने अपनी सहमति तथा 12 विद्यार्थियों ने तटस्थता व 32 विद्यार्थियों ने असहमति प्रकट की हैं। 2 df के लिए .05 स्तर पर काई वर्ग का टेबल मूल्य 5.99 तथा .01 स्तर पर काई वर्ग का टेबल मूल्य 9.21 होता हैं। यदि काई वर्ग का गणना मूल्य टेबल मूल्य से अधिक हो तो अन्तर सार्थक होता हैं। विद्यार्थियों के सहमति, असहमति तथा तटस्थता में अन्तर की सार्थकता के लिए काई वर्ग की गणना की गई जो 182.55 प्राप्त हुआ है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है।

तृतीय प्रश्नः सोशल मीडिया साइट के द्वारा आप कोई शिक्षा प्रद वेबसाइट पढ़ते हैं।

इस प्रश्न हेतु 200 विद्यार्थियों का अभिमत लिया गया जिसमें 151 विद्यार्थियों ने अपनी सहमति तथा 18 विद्यार्थियों ने तटस्थता व 31 विद्यार्थियों ने असहमति प्रकट की हैं। 2 df के लिए .05 स्तर पर काई वर्ग का टेबल मूल्य 5.99 तथा .01 स्तर पर काई वर्ग का टेबल मूल्य 9.21 होता हैं। यदि काई वर्ग का गणना मूल्य टेबल मूल्य से अधिक हो तो अन्तर सार्थक होता हैं। विद्यार्थियों के सहमति, असहमति तथा तटस्थता में अन्तर की सार्थकता के लिए काई वर्ग की गणना की गई जो 161.28 प्राप्त हुआ है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है।

चतुर्थ प्रश्नः सोशल मीडिया के उपयोग करने के बाद आपकी पढ़ने की आदत में कोई बदलाव आया हैं।

इस प्रश्न हेतु 200 विद्यार्थियों का अभिमत लिया गया जिसमें 88 विद्यार्थियों ने अपनी सहमति तथा 61 विद्यार्थियों ने तटस्थता व 51 विद्यार्थियों ने असहमति प्रकट की हैं। 2 df के लिए .05 स्तर पर काई वर्ग का टेबल मूल्य 5.99 तथा .01 स्तर पर काई वर्ग का टेबल मूल्य 9.21 होता हैं। यदि काई वर्ग का गणना मूल्य टेबल मूल्य से अधिक हो तो अन्तर सार्थक होता हैं। विद्यार्थियों के सहमति, असहमति तथा तटस्थता में अन्तर की सार्थकता के लिए काई वर्ग की गणना की गई जो 10.99 प्राप्त हुआ है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है।

पंचम प्रश्नः व्हाटसअप का उपयोग विद्यार्थियों के शैक्षणिक कार्यों का उत्तम साधन है।

इस प्रश्न हेतु 200 विद्यार्थियों का अभिमत लिया गया जिसमें 101 विद्यार्थियों ने अपनी सहमति तथा 33 विद्यार्थियों ने तटस्थता व 66 विद्यार्थियों ने असहमति प्रकट की हैं। 2 df के लिए .05 स्तर पर काई वर्ग का टेबल मूल्य 5.99 तथा .01 स्तर पर काई वर्ग का टेबल मूल्य 9.21 होता हैं। यदि काई वर्ग का गणना मूल्य टेबल मूल्य से अधिक हो तो अन्तर सार्थक होता हैं। विद्यार्थियों के सहमति, असहमति तथा तटस्थता में अन्तर की सार्थकता के लिए काई वर्ग की गणना की गई जो 34.69 प्राप्त हुआ है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है।

षष्ठम् प्रश्नः फेसबुक का उपयोग विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर पडता है।

इस प्रश्न हेतु 200 विद्यार्थियों का अभिमत लिया गया जिसमें 178 विद्यार्थियों ने अपनी सहमति तथा 7 विद्यार्थियों ने तटस्थता व 15 विद्यार्थियों ने असहमति प्रकट की हैं। 2 df के लिए .05 स्तर पर काई वर्ग का टेबल मूल्य 5.99 तथा .01 स्तर पर काई वर्ग का टेबल मूल्य 9.21 होता हैं। यदि काई वर्ग का गणना मूल्य टेबल मूल्य से अधिक हो तो अन्तर सार्थक होता हैं। विद्यार्थियों के सहमति, असहमति तथा तटस्थता में अन्तर की सार्थकता के लिए काई वर्ग की गणना की गई जो 279.36 प्राप्त हुआ है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है।

सप्तम प्रश्नः सोशल मीडिया का उपयोग विद्यार्थियों के शिक्षण समय में कमी लाता है।

इस प्रश्न हेतु 200 विद्यार्थियों का अभिमत लिया गया जिसमें 88 विद्यार्थियों ने अपनी सहमति तथा 89 विद्यार्थियों ने तटस्थता व 23 विद्यार्थियों ने असहमति प्रकट की हैं। 2 df के लिए .05 स्तर पर काई वर्ग का टेबल मूल्य 5.99 तथा .01 स्तर पर काई वर्ग का टेबल मूल्य 9.21 होता हैं। यदि काई वर्ग का गणना मूल्य टेबल मूल्य से अधिक हो तो अन्तर सार्थक होता हैं। विद्यार्थियों के सहमति, असहमति तथा तटस्थता में अन्तर की सार्थकता के लिए काई वर्ग की गणना की गई जो 42.91 प्राप्त हुआ है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है।

आरेख क्रमांक 1: सोशल मीडिया का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का सहमत, तटस्थ, असहमत, संख्या एवं काई वर्ग दर्शाने वाला आरेख

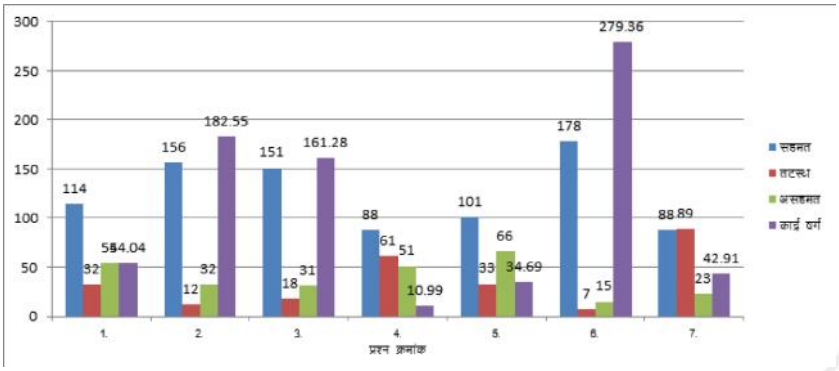

निष्कर्ष

उपरोक्त शोध प्रश्न का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि सोशल मीडिया के प्रयोग से विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि की सार्थक वृद्धि हो सकेगी।

सुझाव

प्रस्तुत शोध समस्या के विश्लेषण और व्याख्या से जो निष्कर्ष प्राप्त हुए है उन्हीं निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये जा सकते है जो विद्यार्थियों के विकास में सहायक सिद्ध होगेः

- सोशल मीडिया के उपयोग पर पारिवारिक और शैक्षणिक स्तर पर निगरानी रखनी चाहिए।
- सोशल मीडिया के उपयोग को लेकर पारिवारिक और विद्यालय स्तर पर कार्यशाला का आयोजन किया जाना चाहिए।
- सामाजिक और नैतिक मूल्यों के महत्व के बारे में विद्यार्थियों को सजग करना चाहिए।
- सोशल मीडिया पर खबरों के संबंध में सेंसरशिप होनी चाहिए।
- सोशल मीडिया के गलत उपयोग पर उचित कानूनी कार्यवाही होनी चाहिए।
- विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष रूप से सोशल मीडिया के सदुपयोग और दुरूपयोग के बारे में बताना चाहिए।
- विद्यार्थियों में विभिन्न गतिविधियों को कराकर उन्हें इसके ज्यादा प्रयोग से हतोत्साहित करना चाहिए।
- मोबाइल, नेट, लैपटाप पर लगातर जुडे रहने पर उसके दुष्प्रभाव से अवगत कराकर उन्हें ज्यादा इसका उपयोग करने से रोका जाए।

अनुकरणीय अध्ययन

- प्राथमिक विद्यार्थियों के पालकों में सोशल मीडिया के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
- सभी स्तर के विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रति चेतना एवं अभिव्यक्ति का समीक्षात्मक अध्ययन करना।
- पूर्व माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में किशोर–किशोरियों को सोशल मीडिया के पड़ने वाले मानसिक प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
- माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शिक्षकों का सोशल मीडिया के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
- सी.बी.एस.सी, आई.सी.एस.सी. व सी. जी. बोर्ड संस्थाओं में विद्यार्थियों को सोशल मीडिया के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

संदर्भ सूची

1. मीडिया का जनजीवन पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावः– रामसुमेट।

2. अप्रैल 2016 / कम्प्यूटर संचार सूचना पेज नं. 9 पत्रिका।
3. कम्प्यूटर संचार सूचना / अप्रैल 2016 पेज न ं. 10।
4. महाजन धर्मवीर, *''भारत की सांस्कृतिक विरासत'',* पृ. 165 राजनीति में पूर्वाग्रह।
5. भारतीय संस्कृति एवं युवा लोकमंगल, इन्टरनेट पत्रिका, वर्ष 2008।
6. मिश्रा उमेश, *''भारतीय दर्शन'',* हिन्दी समिति सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ, तृतीय संस्करण, 1964, पृष्ठ–377।
7. द्विवेदी संजय, *''सोशल नेटवर्किंग नए समय का संवाद'',* 7 सितम्बर 2011।
8. भावना एस., ''युवाओं पर मीडिया का प्रभाव'' पूरिनत यामकानाथ,''सोशल नेटवर्किंग साइट्स का चेन्नई एवं कोयम्बटूर के कॉलेज के अन्तः व्यैक्तिक सम्बंधों पर प्रभाव का अध्ययन।
9. नायडू गीतांजलि एवं अग्रवाल सुनील, ''सोशल नेटवर्किंग साइट्स का चेन्नई एवं कोयम्बटूर के कॉलेज और छात्रों अन्तः व्यैक्तिक सम्बंधो पर प्रभाव का 2013।
10. प्रकाश विजय, ''सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव'', 2016 महावालेश्वर एस. कब्बूर सावित्री के, ''मोबाइल और इंटरनेट आधारित प्रौद्योगिकी का विद्यार्थियों की शिक्षा पर प्रभाव'' 2 मार्च 2015।
11. मीयांगवाला गुलशन, ''सोशल नेटवर्किंग का युवाओं पर प्रभाव, सितम्बर 2014।
12. राजीव एम.एम., ''सामाजिक रिश्तों पर सोशल मीडिया के प्रभाव'', 16 फरवरी 2015।
13. नसरोगी रीता, ''युवाओं के बीच व्यवहार में बदलाव पर सोशल मीडिया के प्रभाव''।
14. जैसूकुल्दंईराज ए., ''युवाओं की जीवन शैली पर सामाजिक मीडिया के प्रभाव'', 2014।
15. राय उमेश कुमार, ''सोशल मीडिया का बढ़ता दायरा, वरदान भी अभिशाप भी'' 16 अप्रैल, 2015।
16. Anjum Qureshi ने अपने शोध प्रबंध "Use of Social Media and Social Active : A Study of Youth in Jaipur" http://shodhganga.inflibnet.ac.in

****